# हर्बल सिगरेट की अवधारणा छत्तीसगढ़ में पीढ़ीयों पुरानी

## * 35 प्रकार की हर्बल सिगरेट का पारंपरिक प्रयोग
## * हर्बल सिगरेट कर सकती है नयी क्रांति का सूत्रपात

छत्तीसगढ़ में वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण मे जुटे वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि राज्य के पारंपरिक चिकित्सक पीढ़ीयों से विभिन्न रोगों की चिकित्सा के लिये हर्बल सिगरेट का प्रयोग कर रहे हैं। भले ही व्यवसायिक स्तर पर यह ज्ञान नही पहुंचा पर आज भी 35 प्रकार के हर्बल सिगरेट विभिन्न रोगियों को राहत पहुँचा रहे हैं।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों मे किये जा रहे इथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि हर्बल सिगरेट का प्रयोग रोगों के उपचार और बचाव दोनों ही के लिये होता है और राज्य के सभी भागों मे इनका प्रयोग हो रहा है। छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों के पारंपरिक चिकित्सक शीत ऋतु मे उगने वाले औषधीय खरपतवार कुकरौंदा के विभिन्न पौध-भागों विशेषकर पत्तियों का प्रयोग हर्बल सिगरेट बनाने मे करते है। यह सिगरेट दमा के रोगियों के लिये वरदान मानी जाती है। कुकरौंदा की जड़ों से तैयार सिगरेट का प्रयोग बबासिर के रोगियों के लिये अनुमोदित है। चूंकि कुकरौंदा केवल शीत ऋतु मे उगता है इसलिये पारंपरिक चिकित्सक वर्ष भर के लिये हर्बल सिगरेट का निर्माण कर लेते है। कुकरौंदा के पौध भागों के औषधीय गुणों का ह्रास कम से कम हो इसलिये इन्हे पारंपरिक विधियों की सहायता से संग्रहित किया जाता है। कुकरौंदा की तरह धतूरे की पत्तियों का प्रयोग भी श्वांस रोगों की चिकित्सा मे हर्बल सिगरेट के रुप मे होता है पर इन पत्तियों का प्रयोग पारंपरिक चिकित्सक अपनी निगरानी मे करवाते है। रक्त संबंधी दोषों से प्रभावित रोगियों की चिकित्सा मे प्रयोग की जाने वाली हर्बल सिगरेट मे आम की बौर का प्रयोग मुख्य घटक के रुप मे किया जाता है। पेण्ड्रा क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक मृगी के रोगी के उपचार के लिये सुगंधित वनौषधियों से तैयार हर्बल सिगरेट का प्रयोग करते है। इन वनौषधियों मे बच के विभिन्न पौध भागों का प्रयोग लोकप्रिय है। शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिये चिरचिटा और पुर्ननवा से बनी हर्बल सिगरेट का प्रयोग होता है। ये विशेष सिगरेट आधुनिक रोगों जैसे एड्स के रोगियों के लिये वरदान सिद्ध हो सकती है क्योंकि इन रोगों के रोगी की प्रतिरोधक शक्ति बहुत कम हो जाती है। मानसिक रोगों विशेष कर अत्यधिक मानसिक तनाव से जूझ रहे रोगियों को धान और खस की जड़ों से तैयार हर्बल सिगरेट राहत पहुँचाती है पर सिगरेट का प्रयोग सावधानी पूर्वक किया जाता है। इसकी अधिक मात्रा मानसिक विकार पैदा कर सकती है। गंडई - सालेवारा क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक भटकटैया के फलों और बीजों से तैयार हर्बल सिगरेट का प्रयोग दंत रोगों विशेष कर तेज दर्द को कम करने मे करते है। माइग्रेन की चिकित्सा मे तुलसी की जंगली प्रजातियों से बनी हर्बल सिगरेट अहम भूमिका निभाती है।

सिगरेट का नाम सुनते ही घातक रोगों की याद आ जाती है। पंकज अवधिया का मानना है कि छत्तीसगढ़ मे हर्बल सिगरेट से संबंधित पारंपरिक ज्ञान विश्व मे नयी क्रांति ला सकता है। इसके व्यवसायीकरण से विभिन्न रोगों से प्रभावित लाखों रोगियों को लाभान्वित किया जा सकता है।